७ गोत्राणि सहसा अभिगाहमानः अदयः वीरः शतमन्युः दुश्च्यवनः, पृतनाषाद् अयुध्यः इन्द्रः युत्सु अस्माकं सेनाः प्र अवतु [१८५५]- शत्रुके किलेमें अपनी शक्तिसे प्रवेश करनेवाला, शत्रु पर दया न करनेवाला, सैंकडों प्रकारसे शत्रुपर क्रोध करनेवाला, जो अपने स्थानसे हिलाया नहीं जाता, शत्रुकी सेनाको हरानेवाला, जिसके साथ कोई भी युद्ध नहीं कर सकता ऐसा इन्द्र हमारी सेनाकी रक्षा करे।

साहस धैर्य वीरता का प्रतिक नमो
आलस निमिषमात्रहि त्यक्त नमो
मित्रोन्को मित्रता का परिचय नमो
देश को राष्ट्रता का अभिमान नमो ।।
कुटील कारस्थान छेदि आकस्मिती
बुद्धी वरिष्ठ तन्त्र सफल विदेशनीति
एकछत्र ध्यास सह सूर लाम नायक
जगता विचारक थोरवी मान्य नायक ।।
व्यूह भेदुनी बलश्रेष्ठ निर्भीड संचारक
वाहवा उत्तेजक जन समस्त परिवर्तक
आधार ललामभूत अति सामान्य प्रेरक
कलियुग का एकमात्र वीरपुत्र अभिनायक ।।

कमलाकर विश्वनाथ आठल्ये (AS TROLOGER )२७-१२-२०१४